पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 16.05.2025 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-41 अंक-24 बैसाख-2082 दयानन्दाब्द 201 16 मई से 31 मई 2025 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.05.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

आर्य समाज ने भारतीय सेना को दी बधाई

भारतीय सेना पर हमें गर्व है –अनिल आर्य

बुधवार 7 मई 2025, आर्य समाज ने पहल गांव नरसंहार का बदला लेने के लिए भारतीय सेना को बधाई दी है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि हमें भारतीय सेना पर गर्व है। विपरित परिस्थितियों में भी भारतीय सेना हर काम को सफल अंजाम देती है। उन्होंने कहा कि देश की आजादी में आर्य समाज का अत्यधिक योगदान रहा आज फिर आर्य जगत प्रधानमंत्री जी के साथ है और कंधे से कंधा मिलाकर साथ रहेगा. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश स्वाभिमान से आगे बढ़ रहा है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने बताया कि आज 'राष्ट्र रक्षा यज्ञ' करके देश की सुख–समृद्धि की प्रार्थना की गई।

सादर निमंत्रण सादर निमंत्रण सादर निमंत्रण

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में

डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कुमार चौहान के सान्निध्य में

विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर

उद्घाटन समारोहः– शनिवार 31 मई 2025, शाम 5.00 बजे से 700 बजे तक एवम्

समापन समारोहः– रविवार 8 जून 2025, प्रातः 11 से 1.00 बजे तक

स्थानः– एमिटी इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर 44, नोएडा

आर्य युवकों द्वारा भव्य व्यायाम प्रदर्शन। आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

भवदीयः–

आनंद चौहान	अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य
संरक्षक	राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर बागपत में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर दिनांक 7 जून से 15 जून 2025 तक स्थान-जनता इंटर कॉलेज पलडी-बागपत, उत्तर प्रदेश (देहली से रोहरा रोड-बरनावा से पलडी) में आयोजित किया जा रहा है। **आर्य समाज की 150वीं (सार्द्ध शताब्दी) पर शिविर के विशेष आकर्षण, शूटिंग, धनुर्विद्या, मार्शल आर्ट्स एवं आर्य जगत के जाने-माने विद्वानों द्वारा बौद्धिक उद्बोधन।** इसमे भाग लेने के लिए 13 वर्ष से अधिक आयु की आर्य वीरांगनाएं दिनांक 26 मई 2025 तक अपने नाम निम्नलिखित नम्बरों पर देवें ताकि व्यवस्था सुचारु रूप से हो सके।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति- प्रधान संचालिका, मो. 9672286863

मृदुला चौहान- संचालिका, मो. 9810702760

फरीदाबाद आर्य युवक शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद हरियाणा के तत्वावधान में विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर दिनांक 9 जून 15 जून 2025 तक आर्य समाज सेक्टर 28–31, फरीदाबाद में आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक युवक सम्पर्क करें–

–वीरेंद्र योगाचार्य, मो. 9350615369

जम्मू आर्य युवा शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद जम्मू कश्मीर के तत्वावधान में **विशाल आर्य युवा शिविर सोमवार 9 जून से रविवार 15 जून 2025** तक आर्य समाज जानी पुर कालोनी जम्मू में आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक युवक सम्पर्क करे–

–कपिल बब्बर, संयोजक– मो. 9906232397

मैं और मेरा प्रिय देश भारत (आर्यावर्त)

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मैं अपने शरीर में रहने वाला एक चेतन तत्व हूं। आध्यात्मिक जगत् में इसे जीवात्मा कह कर पुकारा जाता है। मैं अनादि, नित्य, अजन्मा, अविनाशी, जन्म–मृत्यु के चक्र में फंसा हुआ तथा इससे मुक्ति हेतु प्रयत्नशील, चेतन, स्वल्प परिमाण वाला, अल्पज्ञानी एवं ससीम, आनन्दरहित, सुख–आनन्द का अभिलाषी तत्व हूं। मेरा जन्म माता–पिता से हुआ है। मेरे माता–पिता व इस संसार को, जिसमें मुझे भेजा गया है, पहले से ही रचा व बनाया गया है। पहले सृष्टि की रचना एक अनादि, नित्य, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और चेतन सत्ता ने की, उसके पश्चात उसी सत्ता ने वनस्पति और पशु व पक्षी आदि प्राणियों की रचना करके मनुष्योत्पत्ति की। विगत 1,96,08,53,125 वर्षो से यह क्रम अनवरत जारी है। मुझे, मेरे माता–पिता को व इस सृष्टि को बनाने वाला कौन है? इसका उत्तर शास्त्रों के अध्ययन, चिन्तन–मनन व विवेक से मिलता है कि कोई सत्य, चेतन, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, कारण प्रकृति का स्वामी व नियंत्रक, नित्य, अनुत्पन्न, अविनाशी, सर्व–अन्तर्यामी, सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्व है जिसे हम ईश्वर, परमात्मा, भगवान, सृष्टिकर्ता, गाड, मालिक आदि नामों से जानते हैं। यह ईश्वर सत्ता एक ही हो सकती है, एक से अधिक नहीं, ऐसा सृष्टि को देखकर व विचार करने पर ज्ञात होता है। सृष्टि के आरम्भ से अब तक इस जगत में अनेक श्रेष्ठ पुरूषों ने जन्म लिया है जिनका यश व कीर्ति आज तक विद्यमान है। यह सभी सत्याचारी, अन्याय से पीड़ित लोगों की रक्षा करने वाले, त्यागी, तपस्वी, ईश्वरभक्त, वेदभक्त एवं वेदानुयायी, माता–पिता व आचार्यो के प्रति सेवा व भक्ति–भावना रखने वाले थे। इनमें से कुछ ज्ञात महापुरूष मनु, राम, कृष्ण, गौतम, कपिल, कणाद, पतंजलि, वेदव्यास, चाणक्य, दयानन्द, सरदार पटेल, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, राम प्रसाद बिस्मिल, चन्द्र शेखर आजाद, बन्दा बैरागी, भगत सिंह आदि हुए हैं। हमें इन महापुरूषों के जीवन से प्रेरणा लेकर उनके गुणों को धारण करना है, यही उन महापुरूषों की पूजा है एवं स्तुति–प्रार्थना–उपासना–ध्यान आदि केवल ईश्वर का ही करना है और यही ईश्वर की पूजा है।

वेदादि साहित्य का अध्ययन करने पर हमने पाया कि हमारा जन्म भोग व अपवर्ग के लिए हुआ है। भोग का अर्थ है कि हमने अपने पूर्वजन्मों में जो अच्छे–बुरे कर्म किये थे उन कर्मों में से जिन कर्मों का भोग अभी तक हमें प्राप्त नहीं हुआ है, वह हमारा प्रारब्ध है। उसे हमें इस जन्म व अगले जन्मों में भोगना है। इन कर्मो के फलों को भोगने के साथ ईश्वर ने हमें एक सुविधा यह भी दी है कि यदि हम स्वाध्याय से अपने ज्ञान को बढ़ा कर एवं यथार्थ वेदोक्त स्तुति–प्रार्थना–उपासना से ध्यान व समाधि को सिद्ध कर ईश्वर का साक्षात्कार कर लेते हैं तो हमारी मुक्ति व हमें मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है वा हो जायेगी। मुक्ति की अवधि एक परान्तकाल अर्थात् 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्ष होती है। उसके बाद हमारा पुनः जन्म होगा। इस मुक्ति की अवधि में हमें किंचित भी दुःख की अवस्था से नहीं गुजरना पड़ेगा। यह उपलब्धि हमारे शास्त्राध्ययन एवं उसके अनुसार जीवन–यापन व योग साधना से प्राप्त होती है। यहां यह भी लिखना उचित होगा कि सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक और यहां से मध्य काल में बौद्ध मत के आरम्भ तक सारे विश्व में केवल वैदिक धर्म व संस्कृति का ही प्रचार–प्रसार–पालन व धारण सर्वत्र रहा है। महाभारत काल के पश्चात अज्ञानतावश बौ़द्ध, जैन, पौराणिक व अन्य दूरस्थ देशों में ऐसे ही भिन्न भिन्न मतों का प्रादुर्भाव हुआ। यदि सभी मतों के व्यक्ति मिल कर परस्पर मित्रता व निष्पक्षता से विचार–विमर्श कर मनुष्य धर्म का निर्धारण करें तो निश्चित रूप से वैदिक धर्म की मान्यताओं व सिद्धान्तों को अर्थात् वैदिक–मत को ही सर्वसम्मति से स्वीकार करना होगा और तभी वेद और वेदेतर मतों के लोगों को जीवन में ईश्वरीय आनन्द की उपलब्धि एवं उसके पश्चात मुक्ति प्राप्त हो सकेगी।

मेरा जन्म आज से लगभग 72 वर्ष पूर्व भारत में हुआ। तब से मैं यहां रह रहा हूं। शैशव अवस्था में माता पिता ने धर्म व रीति रिवाज सम्बन्धी जो बातें बताई व समझाईं, उन्हें उसी रूप में बिना सोचे विचारे मैंने स्वीकार कर लिया और मानता रहा। विद्यालय की शिक्षा के समय एक पड़ोसी आर्य समाजी मित्र मिल गये, 18 वर्ष की आयु में उनके साथ सायंकाल भ्रमण की आदत पड़ गई। यदा–कदा वह यत्र–तत्र हो रहे पौराणिक वा सनातनी प्रवचनों में ले जाया करते थे और आर्य समाजी दृष्टिकोण से उनकी समालोचना करते थे। आरम्भ में पौराणिक संस्कारों के कारण मुझे उनकी आलोचनायें उचित नहीं लगती थी। यदा–कदा आर्य समाज भी जाना होता था और वहां यज्ञ, भजन व विद्वानों के विचारों को सुना और वौदिक मान्यताओं पर आधारित पुस्तकें क्रय करके स्वाध्याय किया। धीरे–धीरे पता नहीं कब आर्यसमाज के वेद संबंधी विचारों ने मेरे मन व मस्तिष्क पर अधिकार कर लिया और पौराणिक अज्ञान–अन्धविश्वास व कुरीतियों से युक्त बातें मन से दूर चली गईं। मेरा अब दृण विश्वास है कि ईश्वर की सगुण व निर्गुण भक्ति के स्थान पर पौराणिक रीति से मैं जो मूर्ति पूजा व कर्मकाण्ड आदि करता था, वह अधिकांश असत्य, अनावश्यक और अनुचित था। आज मैं आत्मिक सन्तोष का अनुभव करता हूं। यह सब मुझे सत्यार्थ प्रकाश सहित वेद, दर्शन, उपनिषद एवं आर्य विद्वानों के ग्रन्थों सहित खण्डन–मण्डन विषयक ग्रन्थों के स्वाध्याय व विद्वानों के प्रवचनों सहित चिन्तन व मनन से प्राप्त हुआ है। आत्मा व मन इस बात से सन्तुष्ट हैं कि हमें इस संसार व ईश्वर के बारे में यथार्थ ज्ञान है।

जो ज्ञान व संस्कार अब हमारे हैं वह भारत के सभी लोगों व विश्व के लोगों के नहीं है। वहां इस प्रकार के सत्य व परम उपयोगी विचारों को जानने व उसके प्रचार प्रसार की किसी प्रकार की व्यवस्था नहीं है। यदि समुचित व्यवस्था होती तो मुझे लगता है कि विद्यार्थी काल में जिस प्रकार से मेरा बौद्धिक मतान्तरण हुआ, उसी प्रकार शायद संसार के सभी लोगों का हो सकता था। मुझे इन विचारों को मानने या अपनाने के लिए किसी ने प्रेरणा व प्रभाव का प्रयोग नहीं किया अपितु यह स्वतः हुआ और तब हुआ जब मेरी आत्मा ने उसे स्वीकार किया। मुझे लगता है और यह वास्तविकता है कि संसार में वैदिक विचारों, सिद्धान्तों व मान्यताओं का प्रचार नगण्य है एवं दूसरे वेदमत के विरोधी मत व उनके अनुयायी योजनाबद्ध रूप से वेद एवं पौराणिक लोगों, आदिवासियों, पिछड़े व दलित बन्धुओं, अशिक्षितों आदि को मतान्तरित कर उन्हें स्वमतों में दीक्षित कर इस देश की राजनैतिक सत्ता को हथिया कर अपना छद्म उद्देश्य पूरा करना चाहते हैं। इसके लिए वह अन्दर ही अन्दर सब प्रकार के कुत्सित कार्य भी करते हैं परन्तु बाहर से स्वयं को बहुत ही अच्छा व मानवता का सेवक दिखाते हैं जिसमें राजनीतिक स्वार्थ के वशीभूत हमारे ही कुछ बन्धु आंखे बन्द कर सहयोग व समर्थन करते व मौन रहते हैं।

हमें लगता है कि हमारा कर्तव्य है कि ईश्वर से प्राप्त वेद एवं वैदिक ज्ञान की रक्षा होनी चाहिये। ऐसा न हो कि भविष्य में यह कहीं विलुप्त हो जायें। इसके लिए हमें हर सम्भव प्रयास करना है। अपनों को मनाना है व उन्हें इस विश्व–वरेण्य सनातन वैदिक धर्म एवं संस्कृति के महत्व को हृदयगंम कराना है। हमें विश्व के अन्य मतावलम्बी बन्धुओं को भी आमन्त्रित करना है कि वह भी ईश्वर, जीवात्मा के स्वरूप पर हमसे प्रेमपूर्वक संवाद व चर्चा करें। यदि उन्हें हमारे विचारों में कहीं कोई कमी दृष्टिगोचर होती है तो वह हमें बतायें, हम सदिच्छा से उसे समझ कर उसका समाधान व निराकरण करेंगे। यह तभी सम्भव होगा जब हम स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी अमर स्वामी, पं. शान्तिप्रकाश, पं. गणपति शर्मा जैसा स्वयं को बनायें। इसके लिए हमें अपने गृहस्थ जीवन में भी और उसके पश्चात 50 या 60 वर्ष की आयु में गृहस्थ व व्यवसाय से सेवानिवृत्त होकर घर में रहते हुए या वानप्रस्थी की भांति इस कार्य में जुटना पड़ेगा। गृहस्थ व सेवाकाल व व्यवसाय के काल में भी इस कार्य को यथाशक्ति करना होगा तभी सेवा निवृत्ति के पश्चात यह काम कर सकेंगे। यदि इसकी उपेक्षा करेंगे तो वह दिन दोबारा आ सकता है जब बौद्धों के प्रचार की भांति हमारे सभी बन्धु भिन्न–2 मतों के अनुयायी बन जायेंगे और उन मतों के लोग हमारी वैदिक धर्म व संस्कृति को नष्ट व समाप्त कर देंगे। ऐसा पहले भी करने के

(शेष पृष्ठ 3 पर)

करनाल आर्य युवक शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् करनाल के तत्वावधान में आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर दिनांक 4 जून से 8 जून 2025 तक आर्य समाज मंदिर सेक्टर 6 ,करनाल में आयोजित किया जाएगा। मार्ग दर्शन **स्वतंत्र कुकरेजा** (प्रांतीय अध्यक्ष), शिविर संयोजक, **अजय आर्य** (जिला अध्यक्ष), **हरेंद्र चौधरी** (मंत्री), **रोशन आर्य** (कोषाध्यक्ष)।

श्री अविनाश बंसल व श्री अमर सिंह आर्य का अभिनन्दन

प्रथम चित्र में आर्य समाज सेवी श्री अविनाश बंसल (अभिनंदन वाटिका) का अभिनंदन करते परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य। द्वितीय चित्र में आर्य समाज उत्तम नगर दिल्ली के कर्मठ मंत्री श्री अमर सिंह आर्य को शिविर का निमंत्रण देते परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य।

श्री मनोहर लाल सपरा का अभिनन्दन व आर्य समाज पश्चिम विहार दिल्ली का उत्सव सम्पन्न

रविवार 11 मई 2025 , प्रथम चित्र में श्री मनोहर लाल सपरा का अभिनंदन करते अनिल आर्य, साध्वी उत्तमांयतीं ,आर्य समाज बी ब्लॉक जनक पुरी दिल्ली के प्रधान श्री कृष्ण बवेजा, कोषाध्यक्ष यश पाल आर्य व आचार्य जी। द्वितीय चित्र में आर्य समाज पश्चिम विहार दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य संबोधित करते हुए आचार्य वांगीश जी, प्रो कल्पना आर्य, डॉ. महावीर अग्रवाल के उद्बोधन हुए। आर्य नेता हीरा लाल चावला, राजेन्द्र लांबा, शशि तुली, नरेश गुलाटी, योगेश मल्होत्रा, सुनील बत्रा, अमर नाथ बत्रा, उपेन्द्र तलवार, सुरेन्द्र कोचर, प्रेम छाबड़ा,गुलाटी जी आदि उपस्थित थे।

आर्य समाज मयूर विहार का उत्सव सम्पन्न

युवा पीढ़ी को संस्कारित करेंगे –अनिल आर्य

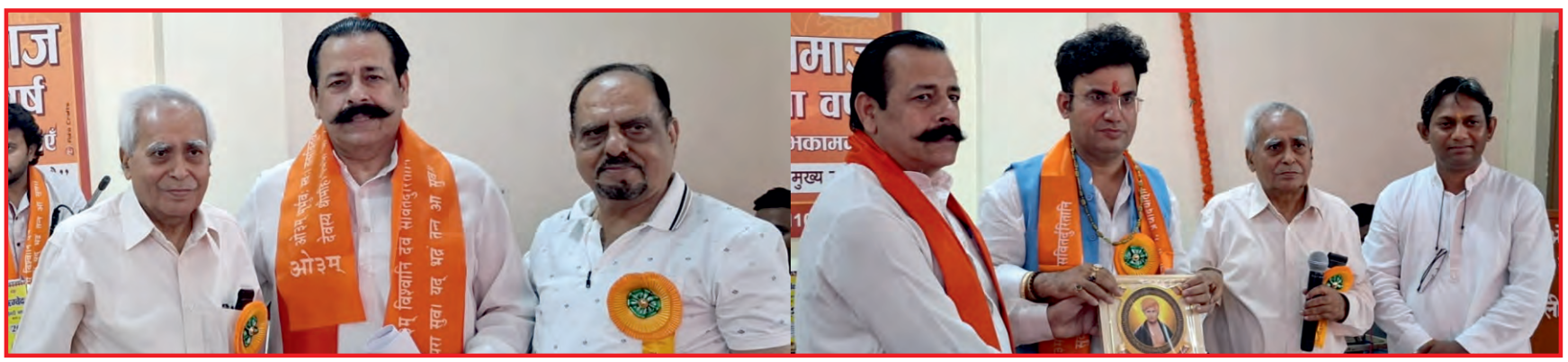

रविवार 4 मई 2025, आर्य समाज के 150 वें स्थापना वर्ष के उपलक्ष्य में आर्य समाज मयूर विहार फेज 1 एवं 2 में विशेष समारोह का आयोजन किया गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि युवा पीढ़ी को संस्कारित करने के लिए शिविर आयोजित किए जाएंगे आज चरित्र निर्माण सबसे बड़ी आवश्यकता है। युवा मातृ पितृ भक्त हों, देश भक्त हों यह आवश्यक है। आर्य समाज ने गत 150 वर्ष में अनेको उल्लेखनीय कार्य किए हैं फिर उस धार को तीव्र करना होगा क्योंकि बढ़ता पाखंड अन्धविश्वास आर्य समाज के लिए चुनौती है। केन्द्रीय मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों की पुनर्स्थापना की उन्होंने कहा कि वेदों की और लौटो। विधायक नेगी,वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार,सुदेश आर्या,श्रुति सेतिया,आचार्य भू देव शास्त्री,अर्चना मोहन ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संचालन आर्य नेता ओम प्रकाश पांडेय व बृज मोहन ने किया। प्रमुख रूप से अमीर चन्द्र रखेजा, ओम प्रकाश शास्त्री,संगीता गौतम, राजेश सपरा, हरबस लाल शर्मा, एन के चोपड़ा, अशोक गुप्ता, अजय आर्य, डी पी एस वर्मा, अभिमन्यु चावला, उषा कथूरिया, अरुण विनायक आदि उपस्थित थे।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल से 712वां वेबिनार सम्पन्न

वैदिक दृष्टि में नमस्ते, कृपया, धन्यवाद विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

सबसे श्रेष्ठ नमन का प्रकार नमस्ते है –आर्य रवि देव गुप्त

अभिवादन करने वाले की आयु विद्या यश और बल यह चारों नित्य बढ़ते हैं –ओम सपड़ा

सोमवार, 5 मई 2025 को केंद्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा ऑनलाइन वैदिक दृष्टि में नमस्ते, कृपया,धन्यवाद विषय पर योगी प्रवीण आर्य की अध्यक्षता में गोष्ठी आयोजन किया गया।कोरोना काल से यह 712 वाँ वेबीनार था। मुख्य वक्ता आर्य रवि देवगुप्त ने कहा कि सबसे श्रेष्ठ नमन का प्रकार नमस्ते है।नमस्कार किसी के सम्मान को अभिव्यक्त करना है यह संघ में प्रचलित है जो की अधूरा है कुछ लोग हाथ मिलाकर भी करते हैं जो की कोरोना में इसी से बचते रहे यह श्रेष्ठ प्रक्रिया नहीं दोनों हाथ जोड़कर या हाथ उठाकर अभिवादन या चरण वंदन करते हैं या साष्टांग दंडवत प्रणाम करते हैं या कमर झुका कर मुख से बोलकर करते हैं। ईश्वर की उपासना में मानसिक रूप से समर्पण करते हैं जिसमें आत्मा की पुकार होती है इसमें मेरुदंड का व्यायाम भी हो रहा है जिसका नमन कर्ता को लाभ भी हो रहा है हर व्यक्ति अपने प्रांत की भाषा में अपने पंथ के आधार पर नमन करता है इससे अहं का भाव होता है कि वह किस प्रांत किस मत का अनुयाई है। आर्यावर्त देश में जब तक नमस्ते का प्रचलन था लोग संगठित थे। महाभारत काल तक योगेश्वर कृष्ण ने, दुर्गा पाठ में,आरएसएस ने भी राष्ट्रीय प्रार्थना में नमस्ते कहा है,यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर है जोकि समाज को जोड़ती है। लेकिन हम सब पंथ के व्यक्ति हो गए सबके ईश्वर अलग हो गए, विचार अलग हो गए।धर्म की तरह नमस्ते भी हर व्यक्ति को एक दुसरे से जोड़ती है जब से यह परंपरा विखंडित हो गई तब से सबके नमन, ईश्वर,आचार विचार,व्यवहार, ग्रंथ अलग–अलग हो गए।सत्य सनातन धर्म के अनुयाई नमस्ते करते हैं सामने वाला भी नमस्ते करता है संगठन और विखंडन नमन से होता है।संसार में आज जो धर्म के प्रतीक नजर आते हैं वास्तव में वह धर्म नहीं पंथ हैं। शिकागो के सम्मेलन में पंडित अयोध्या प्रसाद मिश्र ने कहा था कि वेदों में नमस्ते शब्द का प्रयोग है रामायण काल में,महाभारत काल में भी इसका प्रयोग नमः ते हुआ है इसमें आयु भी कवर्ड है मैं आपको नमन करता हूं बड़ा छोटे से छोटा बड़े से नमस्ते कर सकता है। दोनों हाथ जोड़कर हृदय के पास रखकर सिर झुकाकर नमरू ते आपका नमन सामने वाला भी उसी प्रकार नमन करता है बड़े का सम्मान बराबर वाले का स्वागत और छोटे को आशीर्वाद और दुश्मन को भी नमस्ते करेंगे स्त्री को,पुरुष को, बच्चों को इसमें सब समावेश है जिस तरह माला के मणकों को एक सूत्र पिरोकर रखता है उसी तरह नमस्ते सबको पिरो कर रखती है/जोड़कर रखती है वक्ता ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी बताया कि यह चेहरे की कांति को बढ़ाते हैं। नमस्ते पूरा वाक्य है। नेपाल का राष्ट्रीय अभिवादन नमस्ते है कोरोना काल में भी सबको यह सिखा दिया। वक्ता ने नमन की पूर्ण प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिए दृष्टिकोण दिया। यह पब्लिक रिलेशन एक्सरसाइज है। शिष्टाचार के नाते धन्यवाद करना आवश्यक है।निराभिमान होकर कृतज्ञता का ज्ञापन कर रहा हूं यही मनुष्यता है।यह जादुई प्रभाव है।दूसरे पर मन की निर्मलता निराभिमानता है।शिकायती व्यक्ति अशांत रहता है।धन्यवाद लुब्रिकेंट का कार्य करता है। मुख्य अतिथि ओम सपरा ने बताया कि नमस्ते का मतलब है मैं आपके सामने झुकता हूं मन के उद्गार व्यक्त करने के लिए दूसरे को प्रसन्न करने के लिए कवि कविता की रचना क्यों करता है हमारी बुद्धि का परिष्कार करने के लिए उन्होंने बताया कि अभिवादन करने वाले की आयु, विद्या, यश और बल यह चारों नित्य बढ़ते हैं और उस पर प्रभु की अपार कृपा भी बनी रहती है। गायिका कुसुम भंडारी, सुमित्रा गुप्ता, परवीना ठक्कर,रविंद्र गुप्ता, जनक अरोड़ा,चारु गर्ग आदि ने ईश्वर भक्ति के गीतों को सुनाकर श्रोताओं को मंत्र मुक्त कर दिया। मंच का कुशल संचालन राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने किया और प्रांतीय अध्यक्ष योगी प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

(पृष्ठ 2 का शेष)

प्रयास हुए हैं। वह प्रयास आंशिक रूप से सफल भी हुए व अब भी हो रहे हैं, जिससे हमें अपूर्व हानि हुई है अन्यथा आज का इतिहास कुछ और ही होता। इस बात की कोई गारण्टी नहीं है और न हो सकती है कि ऐसा कभी नहीं होगा। अतः सावधान होकर अपने कर्तव्य का पालन जैसा ऋषि दयानन्द बता गये हैं, हमें भी करना है। हमने इस लेख के शीर्षक में 'मैं और मेरा प्रिय देश भारत (आर्यावर्त)'शब्दों का प्रयोग किया है। इन शब्दों से हमारा तात्पर्य वैदिक संस्कारों से युक्त मैं व मेरे देशवासी व विश्व–वासियों से है जो सत्य, यथार्थ, सृष्टि क्रम के अनुरूप सिद्धान्तों व मान्यताओं को जानें और अपने कल्याणार्थ उसे माने। जब हमारे देश के सभी या अधिकांश लोग वैदिक मतानुयायी हो जायेगें तब यह देश विश्व शान्ति का धाम बन जायेगा। इसके लिए हमें सत्य, प्रेम, सहयोग, परोपकार, सेवा, शिक्षा, वेद प्रचार का प्रयोग करना है। ईश्वर की शक्ति व प्रेरणा हमारे साथ है, अतः हमें चिन्ता नहीं करनी है। हमारी आत्मा अमर है, यह हमारा दृण विश्वास है, अतः भय का काई स्थान नहीं। सत्य व धर्म की रक्षा व प्रचार के मार्ग में चलकर यदि कुछ अप्रिय भी होता है तो ईश्वर से हमें उसकी क्षतिपूर्ति ही नहीं होगी अपितु असीम सुख व आनन्द की उपलब्धि होगी। हमें ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, महाशय राजपाल जी आदि के बलिदान को अपने दृष्टि में रखना चाहिये। अतः आर्य समाज के सभी लोगों को अपने मतभेद भुलाकर विचार मन्थन कर वह योजना बनानी होगी जिससे हम देश के सभी मतों के विद्वानों को अपना सत्य–सन्देश देकर उन्हें आलोचना व समीक्षा का अवसर दें और निवेदन करें कि यदि वह आलोचना नहीं कर रहे हैं और उन्हें हमारी मान्यतायें सत्य लगती हैं तो वह उन्हें स्वीकार कर हमारे साथ मिलकर कार्य करें। ऐसा होने पर ही देश से भ्रष्टाचार, लूट, स्वार्थ का कारोबार, सामाजिक बुराईयां, आतंकवाद, अनाचार व दुराचार आदि समाप्त होगा। सामाजिक अन्याय दूर होगा, जातिवाद, ऊंच–नीच की भावना समाप्त होगी, शोषण व अन्याय समाप्त होगा और हमारा देश ऐसा होगा

आर्य समाज माडल बस्ती दिल्ली के वार्षिकोत्सव
मैं विद्यालय के छात्रों का चित्र

जिससे न केवल हम ही प्रसन्न व सन्तुष्ट होगें अपितु समस्त देशवासी सुःख से अपना जीवन व्यतीत कर सकेंगे। ऐसा करने से ही वैदिक धर्म एवं संस्कृति की वर्तमान एवं भविष्य काल में रक्षा हो सकती है जिसके लिए हमारे ऋषि मुनियों सहित ऋषि दयानन्द और वीर बलिदानियों ने अपने जीवन खपाये हैं व बलिदान दिये हैं। आईये, इस विषय पर चिन्तन करते हैं और जिससे जो बन सकता है उसके लिए अपने जीवन से समय निकाल कर व अपनी सामर्थ्य के अनुसार धन व श्रम के दान सहित वेद प्रचार का अपना कर्तव्य निभायें। हम सत्य पर हैं अतः ईश्वर हमारे साथ है, वह साथ रहेगा, साथ देगा भी, इसकी आशंका नहीं होनी चाहिये।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, दूरभाषः 09412985121

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970